अध्याय 16

हर्षकालीन व बाद का भारत

गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद भारत की राजनीतिक एकता ध्वस्त हो गई। यहाँ कई छोटे–छोटे राज्य बन गए। थानेश्वर में ऐसे ही एक नये राजवंश की स्थापना प्रभाकर वर्धन ने की। उसके दो पुत्र राज्यवर्धन और हर्षवर्धन तथा एक पुत्री राजश्री थी। अपने बड़े भाई की मृत्यु के बाद 606 ई. में हर्षवर्धन थानेश्वर का शासक बना। उसने कन्नौज को अपनी राजधानी बनाई और कई वर्षों तक निरंतर युद्ध करके संपूर्ण उत्तरी भारत पर अपना अधिकार कर लिया।

हर्ष का प्रभाव क्षेत्र :– हर्ष ने राज्य संभालने के साथ ही अपना राज्य एवं अपना प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने के लिए कई सैनिक अभियान चलाए। हर्ष एक वीर योद्धा और विजेता था। उसके प्रमुख अभियानों में बंगाल, पंजाब, चालुक्य और वल्लभी से हुए युद्ध शामिल हैं। वह सिन्धु, नेपाल, उड़ीसा तक अपने अभियानों से अपना प्रभाव डालने में सफल रहा।

हर्ष की धार्मिक नीति और कन्नौज का धर्म सम्मलेनः– हर्ष प्रारम्भ में सूर्य और शिव का उपासक था, बाद में बौद्ध बन गया, किन्तु सभी धर्मों के प्रति उसकी नीति उदार थी। उसके राज्य में शैव, वैष्णव, जैन और बौद्ध धर्म स्वतन्त्रता पूर्वक प्रचलित थे। उसने राज्य के उच्च पदों पर गैर बौद्धों को नियुक्त किया। दान देने अथवा किसी कार्य में वह धार्मिक भेद नहीं करता था। उसने कन्नौज में एक विशाल धर्म सम्मेलन का आयोजन किया। चीनी यात्री ह्वेंनसांग को इसका अध्यक्ष बनाया। यह सम्मेलन 23 दिन तक चला। अनेक बौद्ध भिक्षु , चीनी यात्री, राजा और विद्वानों ने इसमें भाग लिया था।

प्रयाग सभा :– हर्ष प्रत्येक पाँच वर्ष के अंतराल में प्रयाग में एक सभा का आयोजन करता था। 643 ई. में छठी सभा हुई थी। हर्ष अपने पाँच वर्ष की एकत्रित सम्पत्ति को बाँट देता था। यहाँ तक कि स्वयं के धारण किये हुए वस्त्र तक दान में दे देता था। स्वयं के पहिनने के लिए बहिन से माँग कर बदन ढकता था। इस सभा को 'मोक्ष परिषद्' भी कहा जाता था।

हर्षकालीन सिक्के और मुहरें :– हर्षकालीन सोने के सिक्के मिले हैं,उन पर मुद्रा लेख हर्षदेव हैं, और उस पर एक घुड़सवार का चित्र है। अभिलेखों तथा बाणभट्ट के 'हर्ष चरित' में हर्ष को 'हर्षदेव' कहा गया है। हर्ष की अन्य मुहरें भी प्राप्त हुई हैं। सोनीपत मोहर के शीर्ष पर बैल की आकृति है। नालन्दा मुहर में एक अभिलेख है, जिसमें हर्ष को महाराजाधिराज कहा गया है।

लेखक तथा विद्वानों का आश्रयदाताः– हर्ष केवल विजेता और प्रशासक ही नहीं बल्कि विद्वान् भी था। हर्ष की काव्यात्मक कुशलता, मौलिकता, और विस्तृत ज्ञान को बाणभट्ट ने स्वीकार किया है। हर्ष को 'रत्नावली' 'प्रियदर्शिका' और 'नागानन्द' की रचना का श्रेय भी दिया जाता है। जयदेव ने अपनी कृति 'गीत गोविन्दम्' में कहा है कि कालिदास और भास की भाँति हर्ष भी एक महाकवि था। हर्ष के दरबार में कई विद्वान भी थे। बाणभटट् उनमें प्रमुख था और उसने 'हर्षचरित' और 'कादम्बरी' की रचना की। विद्वान हरिदत्त को भी हर्ष ने संरक्षण प्रदान किया।

हर्ष का प्रशासन :– सम्राट हर्ष स्वयं प्रशासन की धुरी था। उसका विचार था कि प्रशासकीय

कुशलता के लिये शासक को निरंतर सचेत रहना चाहिए। उसने दिन को तीन भागो में बाँट लिया था, जिनमें से एक भाग राज्य कार्य के लिए निश्चित था। वह प्रजा को देखने स्वयं नगरों और ग्रामों में यात्रा करता था।

यह ठीक हैं कि सिद्धान्त रुप में हर्ष का प्रशासन निरंकुश था। किन्तु लोगों को अपने अपने क्षेत्र में बहुत सा स्वशासन प्राप्त था। अधिकांश कार्य ग्रामीण समुदायों के हाथ में था। केन्द्रीय सरकार और ग्राम सभाओं में पर्याप्त सहयोग था। माना जाता हैं कि हर्ष का प्रशासन निरंकुश तथा गणतन्त्रीय तत्त्वों का मिश्रण था।

हर्ष का साम्राज्य प्रान्तों, भुक्तियों (डिविजन) और विषयों (जिलों) में विभक्त था। सबसे छोटी इकाई ग्राम थी। प्रशासन चलाने के लिए तीन प्रकार के करों का उल्लेख मिलता है– ''भाग'' भूमि कर था, ''हिरण्य'' नकद कर था, ''बलि'' अतिरिक्त कर था।

हर्ष के समय दण्ड विधान ज्यादा कठोर नहीं थे। दण्ड शारीरिक नहीं दिये जाते थे। अभियुक्त से अपराध स्वीकार कराने के लिए उसे यन्त्रणा नहीं दी जाती थी। परीक्षण द्वारा अपराध की जाँच करने का ढंग भी प्रचलित था।

हर्ष का मूल्यांकन :– हर्ष महान् विजेता था। इसका प्रमाण उस विशाल क्षेत्र से मिलता हैं, जिसे उसने अपने अधिकार में लिया। वह स्वयं विद्वान था और विद्वानों को संरक्षण भी देता था। हर्ष आदर्श शासक था। वह बहुत परिश्रमी था और सत्कार्यों में नींद और भोजन भूल जाता था। हर्ष ने अपना सारा समय अपनी प्रजा की हित वृद्धि में लगाया। यह कार्य करने के लिये दिन उसके लिए बहुत छोटा पड़ जाता था। उदारता और दान में हर्ष का कोई सानी न था। दानशीलता के लिए हर्ष विख्यात था। हर्ष ने नालन्दा विश्वविद्यालय के लिए 100 से अधिक गाँव दान में दिये थे। नालन्दा उस समय विश्व का प्रमुख विश्वविद्यालय बन चुका था।

नालन्दा विश्वविद्यालय :– उत्तर कालीन गुप्त सम्राटों में से एक ने पाँचवी शती में इसकी स्थापना की। भारत तथा सुदूर पार के भारतीय उपनिवेशों के धनी व्यक्तियों ने इसके लिए धन की व्यवस्था की। कालान्तर में यह अन्तर्राष्ट्रीय ज्ञान का मन्दिर बन गया।

नालन्दा विश्वविद्यालय में कम से कम आठ कॉलेज थे, जिन्हें आठ विद्यानुरागियों ने बनवाया था। नालन्दा विश्वविद्यालय में केवल भव्य भवन नहीं थे, बल्कि विद्यार्थियों को अध्ययन के लिए सभी प्रकार की सुविधाएँ भी दी जाती थी। उसमें तीन बड़े पुस्तकालय थे, जिन्हें क्रमशः रत्नसागर, रत्नादाही और रत्नरंजक कहा जाता था। वहाँ 10,000 से भी अधिक विद्यार्थी पढ़ते थे और लगभग 1500 अध्यापक अध्यापन कराते थे। वे कोरिया, मंगोलिया, जापान, चीन, तिब्बत, श्रीलंका, बृहत्तर भारत और भारत के विभिन्न भागों से छात्र यहाँ पढ़ने आते थे तथा बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए यहाँ से विभिन्न भागों में लोग जाते भी थे। नालन्दा विश्वविद्यालय में अध्ययन के प्रमुख विषय वेद, तर्कविद्या, व्याकरण, चिकित्सा, विज्ञान, गणित, ज्योतिष, दर्शन, सांख्य, योग, न्याय आदि एवं बौद्ध धर्म की विभिन्न शाखाओं को पढ़ाया जाता था। हर्षवर्धन ने इस विश्वविद्यालय को प्रश्रय दिया था।

गतिविधि– भारत के अन्य प्राचीन विश्वविद्यालयों के बारे मे जानकारी प्राप्त करें।

सम्राट हर्ष की मृत्यु के बाद भारत में पुनः कई छोटे–छोटे राज्य स्थापित हो गये थे। उत्तर और दक्षिण के इन राज्यों ने अपनी स्वंतत्र सत्ता स्थापित कर ली थी। इन स्वतंत्र राजवंशों ने आठवीं से बारहवीं शताब्दी तक राज्य किया। अपने राज्य विस्तार के लए यद्यपि वे आपस में लड़ते रहे, परन्तु इन्होंने किसी विदेशी शासक को सिन्धु नदी के इस ओर नहीं बढने दिया।

दक्षिण भारत के प्रमुख राजवंश

आठवीं से बारहवीं शताब्दी तक जिन प्रमुख राजवंशों ने दक्षिणी भारत में शासन किया, उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं–

1. **राष्ट्रकूट वंश :–** दक्षिण के राज्यों मे राष्ट्रकूट राज्य सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण था। राष्ट्रकूटों ने कन्नौज और उसके आसपास के प्रदेशों पर अपनी सत्ता स्थापित करने के लिए बार–बार प्रयास किये। इन्होंने नर्मदा नदी के दक्षिण में वर्तमान महाराष्ट्र प्रदेश में अपना राज्य स्थापित किया। प्रारम्भ में वे चालुक्यों के अधीन थे। बाद में राष्ट्रकूट दंतिदुर्ग ने चालुक्यों को हराकर 753 ई. में. अपने राज्य का विस्तार किया। इस वंश के पराक्रमी शासक कृष्ण तृतीय, ध्रुव, गोविन्द, अमोघवर्ष आदि थे।
2. **चालुक्य वंश :–** इस वंश का राज्य नर्मदा नदी के दक्षिण से कृष्णा नदी तक फैला हुआ था। राष्ट्रकूटों और पल्लवों से चालुक्यों का निरन्तर युद्ध होता रहता था। इस वंश का पराक्रमी शासक पुलकेशियन द्वितीय था, जिसने सम्राट हर्षवर्धन को भी पराजित किया था। विक्रमादित्य द्वितीय भी इस वंश का शक्तिशाली शासक था। एक बार 753 ई में राष्ट्रकूटों से पराजित होकर चालुक्यों ने 973 ई. में पुनः अपना राज्य स्थापित किया और मध्य हैदराबाद में कल्याणी को अपनी राजधानी बनायी।
3. **पल्लव वंश :–** यह दक्षिण भारत का प्राचीन राजवंश था। इस वंश का शासक महेन्द्रवर्मन था जो चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय से पराजित हो गया था। बाद में उसके पुत्र नरसिंह वर्मन ने 642 ई. में चालुक्यों की राजधानी पर अधिकार कर लिया। पल्लवों का चालुक्यों से निरन्तर संघर्ष चलता रहता था। नवीं शताब्दी में राष्ट्रकूट और चोल शासकों ने भी पल्लवों पर आक्रमण किया। 885 ई.में चोल शासक आदित्य प्रथम ने पल्लवों को हराकर उनकी राजधानी काँची पर अधिकार कर लिया और इस प्रकार पल्लव राज्य का अंत हो गया।
4. **चोल वंश :–** चोल राज्य कृष्णा और कावेरी नदियों के बीच समुद्रतट पर स्थित था। इस राज्य का विस्तार 864 ई में चोल शासक विजयालय द्वारा किया गया। उसने पल्लवों की अधीनता से चोल राज्य को मुक्त किया। बाद में उसके पुत्र आदित्य ने पल्लव नरेश अपराजित वर्मा को परास्त कर काँची पर अधिकार कर लिया।

इस वंश का सबसे प्रतापी शासक राजेन्द्र प्रथम था जो 1012 ई. में गद्दी पर बैठा। उसने सम्पूर्ण

दक्षिण में अपना राज्य स्थापित कर लिया और उत्तर भारत की ओर आक्रमण किये। वह कलिंग व बंगाल को जीतता हुआ गंगातट तक पहुंच गया और 'गंगे कौण्ड' की उपाधि धारण की। उसने जल सेना बनाकर बंगाल की खाड़ी और बर्मा पर भी विजय प्राप्त की। राजेन्द्र प्रथम एवं अन्य चोल शासकों ने भारतीय सभ्यता और संस्कृति के संरक्षण में विशेष योगदान दिया है।

गतिविधि–

दक्षिण भारत के कुछ और राजवंशों की जानकारी प्राप्त करें एवं वह किन क्षेत्रों में फैला था जानकारी करें।

- **शासन व्यवस्था :–** दक्षिण भारत के प्रमुख राजवंशों की शासन व्यवस्था में राजा सर्वोपरि माना जाता था। राजा शासन की सहायता हेतु मंत्रियों एवं कर्मचारियों की नियुक्ति एवं नियंत्रण करता था। पल्लवों ने राज्य को राष्ट्र, कोट्टम तथा ग्रामों में विभाजित किया था। चोलों ने मण्डल तथा नाडू में विभाजन किया। तमिल प्रदेश के इन नाडुओं के कारण ही वर्तमान नाम तमिलनाडू रखा गया है। उस समय स्थानीय स्वशासन संस्थाएँ कार्य करती थी। ग्राम सभाओं का प्रमुख स्थान था। ग्राम सभाएँ सामान्य प्रबन्ध के अतिरिक्त न्याय, कानून एवं दान की व्यवस्था भी देखती थी।
- **साहित्य एवं कला की उन्नति :–** दक्षिण भारत में तमिल एवं संस्कृत दोनों भाषाओं की उन्नति हुई। राजा साहित्य प्रेमी थे। राष्ट्रकूटों के समय वल्लभी और कन्हेरी विश्वविद्यालय प्रसिद्ध थे। काँची विद्या का बड़ा केन्द्र था। तमिल भाषा में लिखित 'कम्बन रामायण' दक्षिण में बहुत लोकप्रिय हैं। जैन व बौद्ध विद्वानों ने भी अनेक ग्रन्थ लिखे। दक्षिण भारत के राजाओं की मंदिर एवं मूर्तियाँ निर्माण कराने में विशेष रुचि थी। ये मंदिर आज भी कला के उत्तम उदाहरण हैं। मूर्तियाँ पत्थर या काँसे की होती थी। चालुक्य राजाओं ने हिन्दू देवी देवताओं के मंदिर बनवाए। इनमें वातापी का विरुपाक्ष मंदिर प्रसिद्ध है। महाबलीपुरम का मंदिर, ऐलोरा का कैलाश मंदिर और होसबल मंदिर इसी काल में बने। तंजौर के वृहदेश्वर मंदिर में धातु की बनी नटराज की मूर्ति स्थापित है। अजंता के भित्ति चित्र और वृहदेश्वर मंदिर में देवचित्र चित्रकला के अनुपम उदाहरण हैं। चोल शासकों द्वारा विष्णु, राम–सीता आदि की सुन्दर मूर्तियाँ बनवाई गई। दक्षिण के शासकों, विशेष रूप से चोल शासकों ने भारतीय सभ्यता और संस्कृति के संरक्षण में विशेष योगदान दिया है।

गतिविधि–

पाठ में आए मन्दिरों व मूर्तियों के चित्रों का संकलन करें एवं इनके विषय में जानकारी प्राप्त करें।

उत्तर भारत के प्रमुख राजवंश

आठवीं से बारहवीं शताब्दी तक जिन प्रमुख राजवंशों ने उत्तर भारत में शासन किया उनमें से कुछ राजवंश निम्नलिखित हैं :–

1. **प्रतिहार वंश :–** राजा मिहिर भोज इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक था। वह 840 ई. में शासक बना और 50 वर्ष तक राज्य किया। प्रतिहार शासकों ने सिन्ध से आगे बढती हुई विदेशी

शक्ति को लम्बे समय तक रोके रखा था और उत्तर भारत में उनका विस्तार नहीं होने दिया। प्रतिहार शासक साहित्य और कला प्रेमी थे। इनके शासन में भारत ने सांस्कृतिक उन्नति की।

2. **गहडवाल वंश :–** इस वंश का संस्थापक चन्द्रदेव था। उसने प्रतिहारों को हराकर कन्नौज पर अधिकार कर लिया। गहडवाल वंश का अतिंम शासक जयचन्द था। वह 1170 ई.में शासक बना। गौर वंश के शासक मुहम्मद गौरी ने जयचन्द पर आक्रमण किया और कन्नौज पर अधिकार कर गहडवाल वंश की सत्ता समाप्त कर दी।
3. **चौहान वंश :–** इस वंश का राज्य अजमेर–सांभर के भूभाग पर फैला हुआ था। चौहान वंश का प्रथम शक्तिशाली शासक विग्रह राज था। पृथ्वीराज चौहान तृतीय इस वंश का सबसे प्रतापी शासक माना जाता है। उसने 1182 ई. में चन्देल शासक परमाल को पराजित कर साम्राज्य विस्तार किया एवं 1191 ई. में अफगानिस्तान के गौर वंश के शासक मुहम्मद गौरी को तराईन के प्रथम युद्ध में पराजित किया व द्वितीय युद्ध में पृथ्वीराज को पराजय का सामना करना पड़ा।
4. **गुहिल वंश :–** प्राप्त सिक्कों से यह माना जाता हैं कि इस वंश के प्रथम शासक श्री गुहिल थे। मेवाड़ के इस शक्तिशाली राजवंश का पराक्रमी शासक बप्पा रावल के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध हुआ। बप्पा रावल ने नागभट्ट प्रथम आदि शासकों का संघ बनाकर सिंध को अरब आक्रमणकारियों से स्वतंत्र किया तथा अनेक क्षेत्रों को जीतकर अपना प्रभाव स्थापित किया। आगे चल कर यही वंश सिसोदिया वंश कहलाया। इस वंश में राणा हम्मीर, क्षेत्र सिंह, राणा मोकल राणा कुम्भा, राणा सांगा, राणा प्रताप एवं राणा राज सिंह प्रतापी शासक गिने जाते हैं। मेवाड़ का यह शक्तिशाली राजवंश, भारतीय इतिहास में पराक्रमी और बाह्य आक्रमणकारियों के विरुद्ध संघर्ष के लिये प्रसिद्ध हैं।

इन प्रमुख राजवंशों के साथ उत्तर भारत में 'चन्देल वंश' भी था। आल्हा और उदल इसी शासक के वीर सामन्त थे। 'परमार वंश' का प्रमुख प्रतापी शासक राजा भोज था। 'सोलंकी वंश' के समय महमूद गजनवी ने सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण कर मंदिर को लूटा व तोड़ा। 'पालवंश' के काल में विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। 'सेनवंश' के काल में गीत गोविन्द के रचयिता जयदेव उनके दरबारी थे।

गतिविधि–

उत्तर भारत के अन्य प्रमुख राजवंशो की जानकारी प्राप्त करें तथा उनके राजाओं के चित्रों का संकलन करें।

- **शासन व्यवस्था :–** उत्तर भारत के स्वतंत्र राजवंशों की शासन व्यवस्था पूर्णतः निरंकुश थी । परन्तु शासक अपने मंत्रियों से सलाह भी लेते थे। सामंत प्रथा प्रचलित थी, जो स्वतंत्र रुप से शासक के अधीन रहते हुए कार्य करते थे। उस समय ग्राम पंचायतें थी जो राजकीय हस्तक्षेप से मुक्त थी।
- **साहित्य एवं कला की उन्नति** :– इस काल में संस्कृत भाषा में विभिन्न विषयों पर ग्रन्थ लिखे गये, जिनमें माघ का शिशुपालवध, शारवि का किरतार्जुनियम, कल्हण की राजतंरगिणी और जयदेव का गीत गोविन्द प्रमुख हैं। इस काल में स्वतंत्र राजवंशों के शासकों ने अनेक सुन्दर भवनों एवं मंदिरों का

निर्माण कराया, जिनमें भुवनेश्वर का लिंगराज मंदिर, कोणार्क का सूर्य मंदिर, पुरी का जगन्नाथ मंदिर तथा ग्वालियर, चित्तौड़, रणथम्भौर के दुर्ग, राजस्थान के आबूपर्वत पर देलवाड़ा में सफेद संगमरमर के जैन मन्दिर आदि बनाये गये। चित्रकला के क्षेत्र में खूब उन्नति हुई। दीवारों पर पशु पक्षियों व वृक्ष लताओं के सुन्दर चित्र बनाये गये।

पुरी का जगन्नाथ मन्दिर

नालन्दा विश्वविद्यालय

कोणार्क का सूर्य मन्दिर

रणथम्भौर का दुर्ग

सम्राट हर्ष के बाद उत्तर और दक्षिण भारत के इन स्वतंत्र राजवंशों का काल, वीर गाथाओं का काल था। राजनीतिक अस्थिरता होते हुए भी इस काल में भारतीय कला, संस्कृति एवं साहित्य की खूब उन्नति हुई जो आज भी हमारे लिए प्रेरणास्पद हैं।

शब्दावली

गंगेकौण्ड	–	गंगा नदी के क्षेत्र का विजेता
निरंकुश शासक	–	तानाशाह शासक
संरक्षण	–	सुरक्षा

अभ्यास प्रश्न

1. निम्न प्रश्नों के सही उत्तर कोष्ठक में लिखें–

(I) जयदेव की कृति का नाम है –

(अ) कादम्बरी (ब) रत्नावली

(स) गीत गोविन्दम् (द) हर्षचरित ( )

(ii) दक्षिण भारत का राजवंष है –

(अ) प्रतिहार (ब) चालुक्य

(स) गुहिल (द) चौहान ( )

2 हर्ष ने अपनी राजधानी किसे बनाया?

3 गंगेकौण्ड की उपाधि किसने धारण की?

4 हर्ष की रचनाओं के नाम लिखिए।

5 बाणभट्ट की प्रमुख रचनाओं के नाम लिखो।

6 हर्ष के प्रभाव क्षेत्र पर टिप्पणी लिखो ।

7 हर्ष लेखक तथा विद्वानों का आश्रयदाता था, स्पष्ट करो।

8 नालन्दा विश्वविद्यायालय पर टिप्पणी लिखो।

9 दक्षिण भारत के प्रमुख राजवंश कौन कौन से थे? वर्णन करो।

10 दक्षिण भारत में साहित्य एवं कला की उन्नति का वर्णन करो।

11 उत्तर भारत के प्रमुख राजवंश कौनसे थे? वर्णन करो।

12 आठवीं से बारहवीं शताब्दी तक भारत के इतिहास की प्रमुख घटनाओं का वर्णन करो।

गतिविधि–

1. दक्षिण के मन्दिरों के चित्रों का संकलन करो व इनकी अपने आसपास के मन्दिरों से तुलना करो।
2. मानचित्र की सहायता से सम्राट हर्ष के प्रभाव क्षेत्र की जानकारी प्राप्त करें।